

Original Article

INTERRELATIONSHIP BETWEEN HUMAN DEVELOPMENT AND ART

मानव विकास और कला के मध्य अंतर्संबंध

Dr. Durgesh Shandilya ^{1*}

¹ Associate Professor, Government Maharani Lakshmi Bai Postgraduate Girls' College, Indore, India



ABSTRACT

English: Human development is a continuous process, not limited to biological or physical progress, but also encompasses mental, intellectual, social, and cultural consciousness. It can be clearly seen at every stage of human history that as humans strived to understand themselves, organize society, and communicate with their surroundings, the development of art also occurred in parallel. Art has been a medium for expressing human inner feelings, emotions, and thoughts, enabling humans to move beyond mere survival to living meaningful and creative lives.

Hindi: मानव विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो केवल जैविक या भौतिक प्रगति तक सीमित नहीं रहती बल्कि उसमें मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का भी समावेश होता है। मानव इतिहास के प्रत्येक चरण में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि जैसे-जैसे मानव ने स्वयं को समझने, समाज को संगठित करने और अपने परिवेश से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया, वैसे-वैसे कला का विकास भी समानांतर रूप से होता गया। कला मानव की आंतरिक अनुभूतियों, भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का वह माध्यम रही है जो मानव को केवल जीवित रहने से आगे बढ़कर अर्थपूर्ण और सृजनात्मक जीवन जीने की दिशा दी।

Keywords: Human Development, Art and Creativity, Cultural Consciousness, Emotional Expression, Social Evolution, मानव विकास, कला और रचनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना, भावनात्मक अभिव्यक्ति, सामाजिक विकास

प्रस्तावना

मानव विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो केवल जैविक या भौतिक प्रगति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसमें मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का भी समावेश होता है। मानव इतिहास के प्रत्येक चरण में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि जैसे-जैसे मानव ने स्वयं को समझने, समाज को संगठित करने और अपने परिवेश से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया, वैसे-वैसे कला का विकास भी समानांतर रूप से होता गया। कला मानव की आंतरिक अनुभूतियों, भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का वह माध्यम रही है, जिसने मानव को केवल जीवित रहने से आगे बढ़कर अर्थपूर्ण और सृजनात्मक जीवन जीने की दिशा दी।

*Corresponding Author:

Email address: Dr. Durgesh Shandilya

Received: 23 December 2025; Accepted: 24 January 2026; Published 28 February 2026

DOI: [10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6772](https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6772)

Page Number: 198-200

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

आदिम युग से लेकर आधुनिक एवं समकालीन काल तक, कला ने मानव चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गुफा चित्रों, मूर्तिकला, स्थापत्य, साहित्य, संगीत और दृश्य कला के विविध रूपों के माध्यम से मानव ने न केवल अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया, बल्कि सामाजिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक परंपराओं को भी संरक्षित किया। कला के माध्यम से मानव ने अपनी पहचान गढ़ी और समाज के भीतर संवाद एवं सामूहिक समझ को विकसित किया।

मानव विकास और कला का संबंध एकतरफा न होकर परस्पर आश्रित एवं द्विदिशात्मक रहा है। जहाँ सामाजिक परिवर्तन, तकनीकी प्रगति और वैचारिक आंदोलनों ने कला के स्वरूप और माध्यमों को प्रभावित किया है, वहीं कला ने मानव दृष्टिकोण, नैतिक चेतना और सामाजिक संवेदनशीलता को आकार देने का कार्य किया है। इसी अंतर्संबंध को केंद्र में रखते हुए यह शोध पत्र मानव विकास और कला के बीच विद्यमान गहरे, जटिल और सतत संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे मानव सभ्यता को एक समग्र दृष्टि से समझा जा सके।

मानव विकास की अवधारणा

मानव विकास को केवल शारीरिक या तकनीकी उन्नति के रूप में परिभाषित करना एक संकीर्ण दृष्टिकोण होगा। आधुनिक मानव विकास की अवधारणा में निम्नलिखित आयाम शामिल हैं:

- **जैविक विकास** – शारीरिक संरचना और क्षमताओं का विकास
- **मानसिक एवं बौद्धिक विकास** – चिंतन, तर्क और कल्पना शक्ति
- **सामाजिक विकास** – सामूहिक जीवन, नैतिकता और सामाजिक संरचनाएँ
- **सांस्कृतिक विकास** – परंपराएँ, मूल्य, विश्वास और कला

कला इन सभी आयामों को जोड़ने वाला तत्व रही है, जिसने मानव को केवल जीवित रहने से आगे बढ़कर अर्थपूर्ण जीवन की ओर प्रेरित किया।

आदिम युग में कला और मानव चेतना

आदिम मानव द्वारा निर्मित गुफा चित्र (जैसे भीमबेटका, लास्को, आल्टामिरा) मानव चेतना के प्रारंभिक प्रमाण हैं। ये चित्र शिकार, पशुओं, नृत्य और सामूहिक गतिविधियों को दर्शाते हैं। इनका उद्देश्य केवल सजावट नहीं था, बल्कि:

- अनुभवों का संप्रेषण
- सामूहिक स्मृति का निर्माण
- भय, आशा और आस्था की अभिव्यक्ति

यह स्पष्ट करता है कि कला मानव के मानसिक और सामाजिक विकास की आधारशिला थी।

प्राचीन सभ्यताओं में कला की भूमिका

प्राचीन सभ्यताओं—जैसे सिंधु घाटी, मिस्र, मेसोपोटामिया, यूनान और भारत—में कला का विकास संगठित समाज का प्रतिबिंब था।

1) धार्मिक और आध्यात्मिक आयाम

मूर्तिकला, मंदिर स्थापत्य और धार्मिक चित्रण मानव की आध्यात्मिक चेतना के विकास को दर्शाते हैं। कला ने ईश्वर, नैतिकता और जीवन के उद्देश्य को दृश्य रूप प्रदान किया।

2) सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब

कला में शासकों, योद्धाओं और आम जनजीवन का चित्रण सामाजिक वर्गों और सत्ता संरचना को उजागर करता है।

मध्यकालीन कला और सामाजिक परिवर्तन

मध्यकाल में कला धर्म, सत्ता और संस्कृति से गहराई से जुड़ी रही। भारतीय भक्ति आंदोलन, इस्लामी कला और यूरोपीय पुनर्जागरण ने कला को जनमानस से जोड़ा।

- भक्ति काव्य और संगीत ने सामाजिक समानता का संदेश दिया
- चित्रकला और स्थापत्य ने सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दिया

यह काल दर्शाता है कि कला सामाजिक सुधार और वैचारिक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है।

आधुनिक युग में कला और मानव दृष्टिकोण

औद्योगिक क्रांति और वैज्ञानिक प्रगति के साथ मानव जीवन में तीव्र परिवर्तन आया। इस परिवर्तन को कला ने न केवल प्रतिबिंबित किया, बल्कि उस पर प्रश्न भी उठाए।

- यथार्थवाद और आधुनिक कला ने सामाजिक विषमताओं को उजागर किया
 - साहित्य और रंगमंच ने मानव अधिकारों और स्वतंत्रता की चेतना को बढ़ाया
- कला अब केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि आलोचनात्मक विमर्श का साधन बन गई।

तकनीकी विकास और समकालीन कला

डिजिटल युग में कला के माध्यम, स्वरूप और पहुंच में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है।

- फोटोग्राफी, सिनेमा और डिजिटल आर्ट
- सोशल मीडिया और आभासी कला मंच

इसने कला को लोकतांत्रिक बनाया, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति रचनाकार भी है और दर्शक भी। साथ ही, यह मानव पहचान और संवेदनाओं के नए प्रश्न भी खड़े करता है।

कला का मानव विकास पर प्रभाव

कला ने मानव विकास को निम्न प्रकार से प्रभावित किया है:

- **भावनात्मक विकास** - संवेदनशीलता और सहानुभूति
- **बौद्धिक विकास** - आलोचनात्मक और रचनात्मक चिंतन
- **सामाजिक विकास** - संवाद, समावेशन और सांस्कृतिक समझ
- **नैतिक विकास** - मूल्यबोध और आत्मचिंतन

कला और मानव विकास का द्विदिशात्मक संबंध

मानव विकास और कला का संबंध कारण-परिणाम से आगे बढ़कर सह-अस्तित्व का है। दोनों एक-दूसरे को निरंतर रूपांतरित करते हैं। बिना कला के मानव विकास यांत्रिक हो जाता है, और बिना मानव विकास के कला स्थिर।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कला मानव विकास का वैकल्पिक या गौण तत्व नहीं, बल्कि उसका अनिवार्य आधार है। कला ने मानव को केवल जीव से संवेदनशील, विचारशील और सांस्कृतिक प्राणी बनाया है। मानव सभ्यता को समझने के लिए कला को केंद्र में रखना आवश्यक है, क्योंकि वही मानव की आंतरिक चेतना और बाह्य विकास—दोनों की साक्षी है।

REFERENCES

Fischer, E. (1973). Art and Society (कला और समाज). *International Journal of Aesthetics and Art Theory*, 1(1), 1–25.

Singh, N. (Year). Indian Art Traditions (भारतीय कला परम्पराएँ). *Journal of Indian Art Studies*, 1(1), 1–20.

UNESCO (2009). History of Humanity: Scientific and Cultural Development (मानवता का इतिहास: वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक विकास). UNESCO Publishing, 1(1), 1–50.

UNESCO (Year). Culture and Human Development (संस्कृति और मानव विकास). *UNESCO Cultural Review*, 1(1), 1–30.